



जागृति की रूपरेखा

प्रज्ञावतार और युग-सृजन का विज्ञान:
ब्रह्माण्डीय ऊर्जा से घातीय प्रभाव तक

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

अतिवादी अवांछनीयता

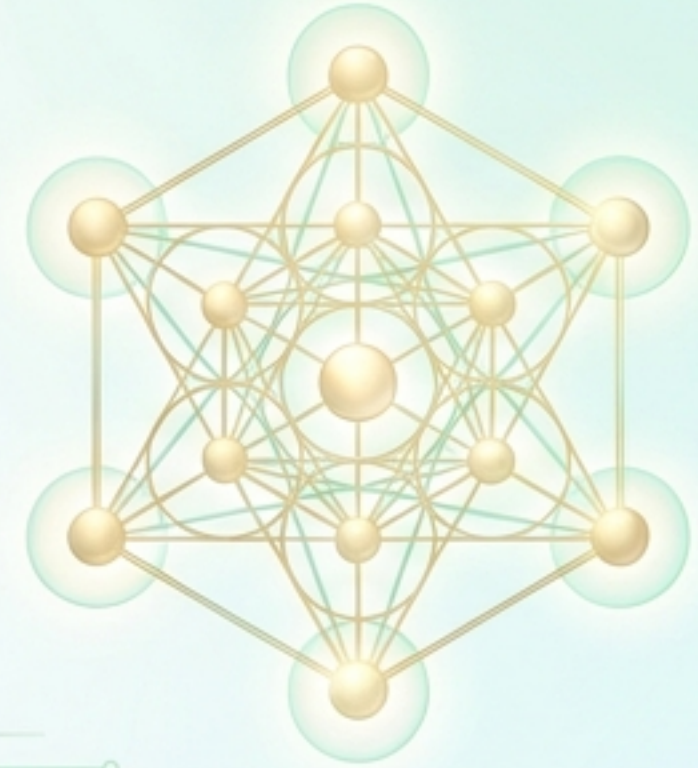


अचिंत्य चिन्तन और
अकरणीय क्रियाकृत्य



भौतिक समाधान पर्याप्त नहीं हैं।
यदि बहुसंख्यक चेतना का यह ‘दृष्टिकोण’
उलट जाए, तो परिस्थितियाँ क्षणमात्र में
बदल जाएँगी।

युगपरिवर्तन



उत्कृष्ट आदर्शवाद और
दूरदर्शी विवेकशीलता

क्षमता की संरचना: भौतिक शरीर बनाम प्राण चेतना



भौतिक शरीर

- संरचना: ५ भौतिक तत्त्व (जल, पावक, गगन, समीरा, क्षिति)।
- सीमाएँ: सीमित शारीरिक सामर्थ्य। भोजन और निद्रा पर निर्भर।
- परिणाम: इन्द्रियजन्य आवश्यकताएँ और सामान्य जीवन-यापन।



प्राण चेतना

- संरचना: असीम ब्रह्माण्डीय ऊर्जा (Cosmic Energy)।
- क्षमताएँ: असाधारण मनोबल और अतीन्द्रिय क्षमताएँ।
- परिणाम: युग-परिवर्तन, प्रवाह को उलटना और महामानव स्तर के कार्य (उदा. गाँधी, बुद्ध)।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचाना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप जब-बख़्त में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहियेगा के मेरे रूप में ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी सहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने कबा प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगश्रुषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्राण देवता है। जिस तरह विद्युत एक तार से दूसरे में प्रवाहित होती है, उसी तरह **उच्चस्तरीय प्राण समर्थ सत्ता से उपयुक्त पात्र में प्रवेश कर सकता है।**

‘शक्तिपात’ का विज्ञान: ऊर्जा का हस्तान्तरण

महाकाल / दैवी सत्ता

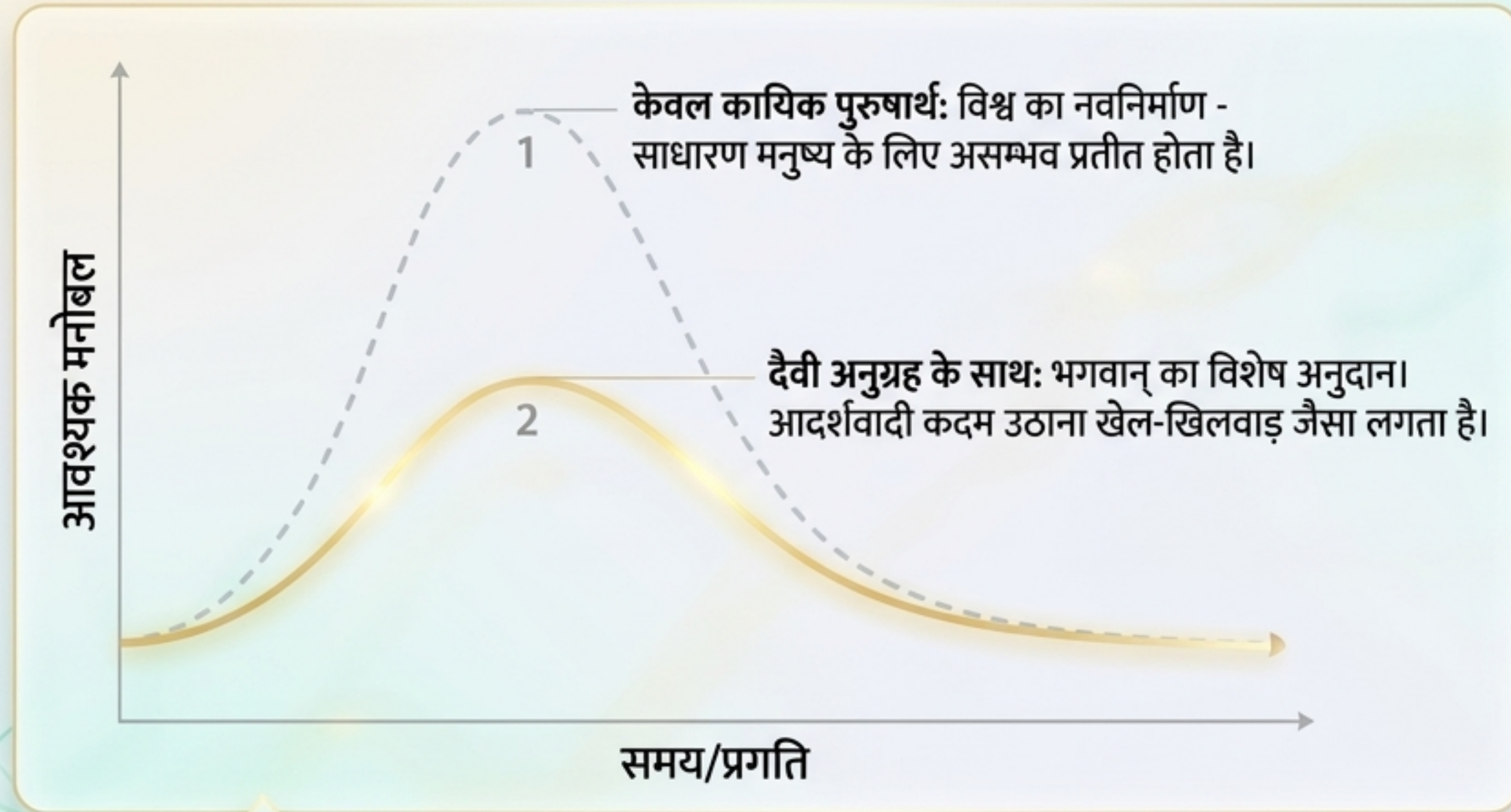
अनन्त प्राण का उद्गम।

दिव्य क्षमता का हस्तान्तरण

जाग्रत व्यक्ति

नर-वानर से नारायण बनने की प्रक्रिया।
सामान्य काया में देवत्व का प्रवेश।

दैवी अनुग्रह: युग-निर्माण का उत्प्रेरक (Catalyst)



अनुग्रह का एक ही चिह्न है — आदर्शवादिता की दिशा में साहसपूर्वक बड़े कदम उठाना और कठिनाइयों को हँसते-हँसते दरगुजर कर देना।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा...
...ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए...
...मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

पात्रता की तात्कालिक आवश्यकता: ऊर्जा ग्रहण करने का विज्ञान

सचन्त पंचमी १९९० को
बन्दीगीया घाताली से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही गिनना रहोगा। ज्ञान शरीर
का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे कहियेगा — सब वस्त्रों से
कहियेगा कि ये ज्ञान शरीर को मेरे कान्धिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का
प्रयास करे।”
— पूज्य गुरुदेव पुनर्वसु वेदपुर्णि उपनिष्ठ
पण्डित श्रीराम राम आचार्य
(भायवी परिवार के संस्थापक)



बर्तन की गहराई और चौड़ाई।
खाली तो कभी रहेगा ही नहीं।

ईश्वरीय सहायता अकारण नहीं मिलती। सृजनकर्ताओं को इन दिनों सत्पात्रों की भारी आवश्यकता है।
नियन्ता का काम रुका पड़ा है, और वे बेचैनी से योग्य हाथों की खोज कर रहे हैं।

प्रतिभा का निवेश: दो मार्ग, दो परिणाम

सामान्य दृष्टिकोण

1

[निवेश]

लिप्सा, लालसा, वासना और संकीर्ण स्वार्थपरता में उपलब्धियों की खपत।

[परिणाम]

क्षणिक सुख, पैसा, स्वास्थ्य और बड़प्पन (जो बुरे लोग भी अर्जित कर लेते हैं)।

दैवी दृष्टिकोण

2

[निवेश]

लोक कल्याण, नव-निर्माण और उत्कृष्ट आदर्शवादिता में क्षमताओं का नियोजन।

[परिणाम]

महामानवों की पंक्ति में स्थान, चिरकाल तक गाई जाने वाली कीर्ति, और असंख्यों का हित-साधन।

“क्षुद्रं हृदय दौर्बल्यं त्यत्वं तिष्ठ परंतप” — मनुष्य की कृपणता और संकीर्णता ही सबसे बड़ा अभिशाप है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

युगसन्धि: महान् परिवर्तन की ऐतिहासिक वेला

युगसन्धि कालः
प्रभातकाल का
ब्रह्ममुहूर्त

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के
बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप
सबसे कहियेगा — सब बच्चों से
कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-
जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

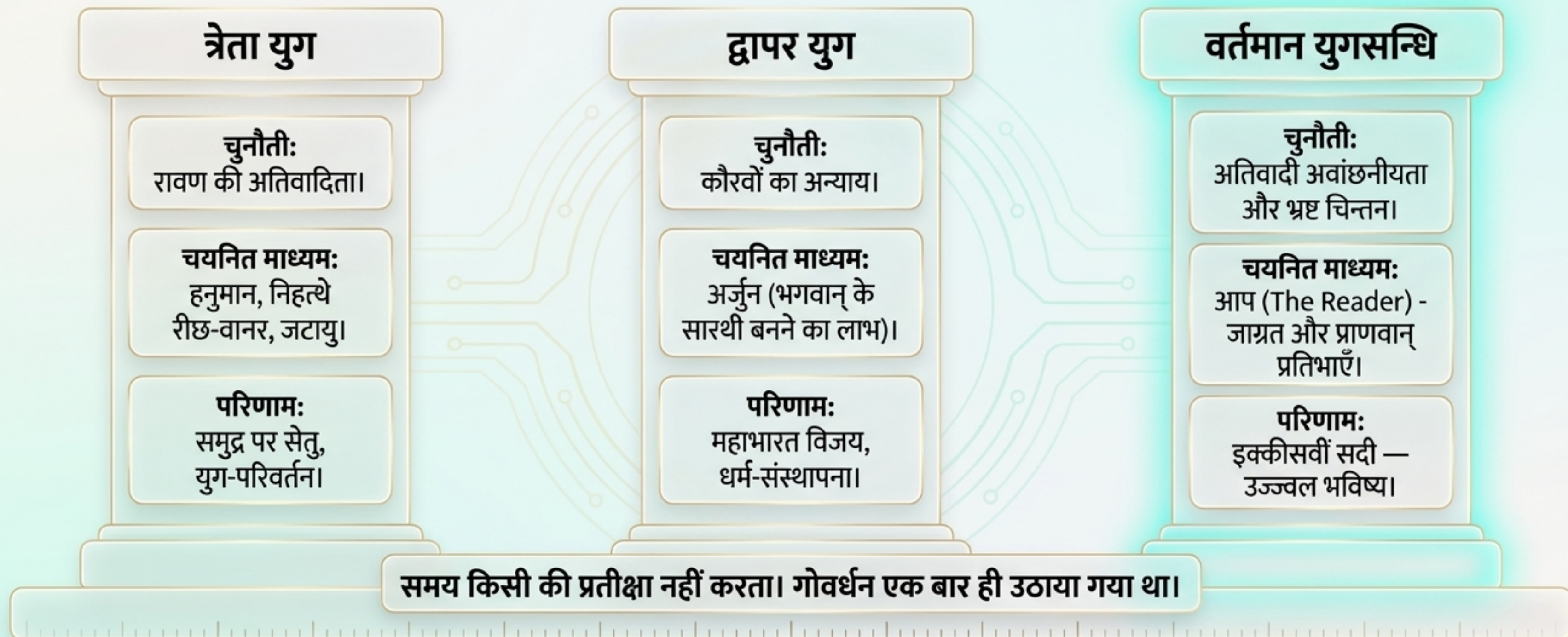
— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

✦ असाधारण गुणनफल: इस अवधि में
किया गया स्वल्प पुरुषार्थ उच्च कोटि
का शौर्य पदक दिलाता है।

✦ सीमित अवसर: यह ऐसा विशेष समय
है जो हजारों-लाखों वर्षों बाद एक
बार आता है।

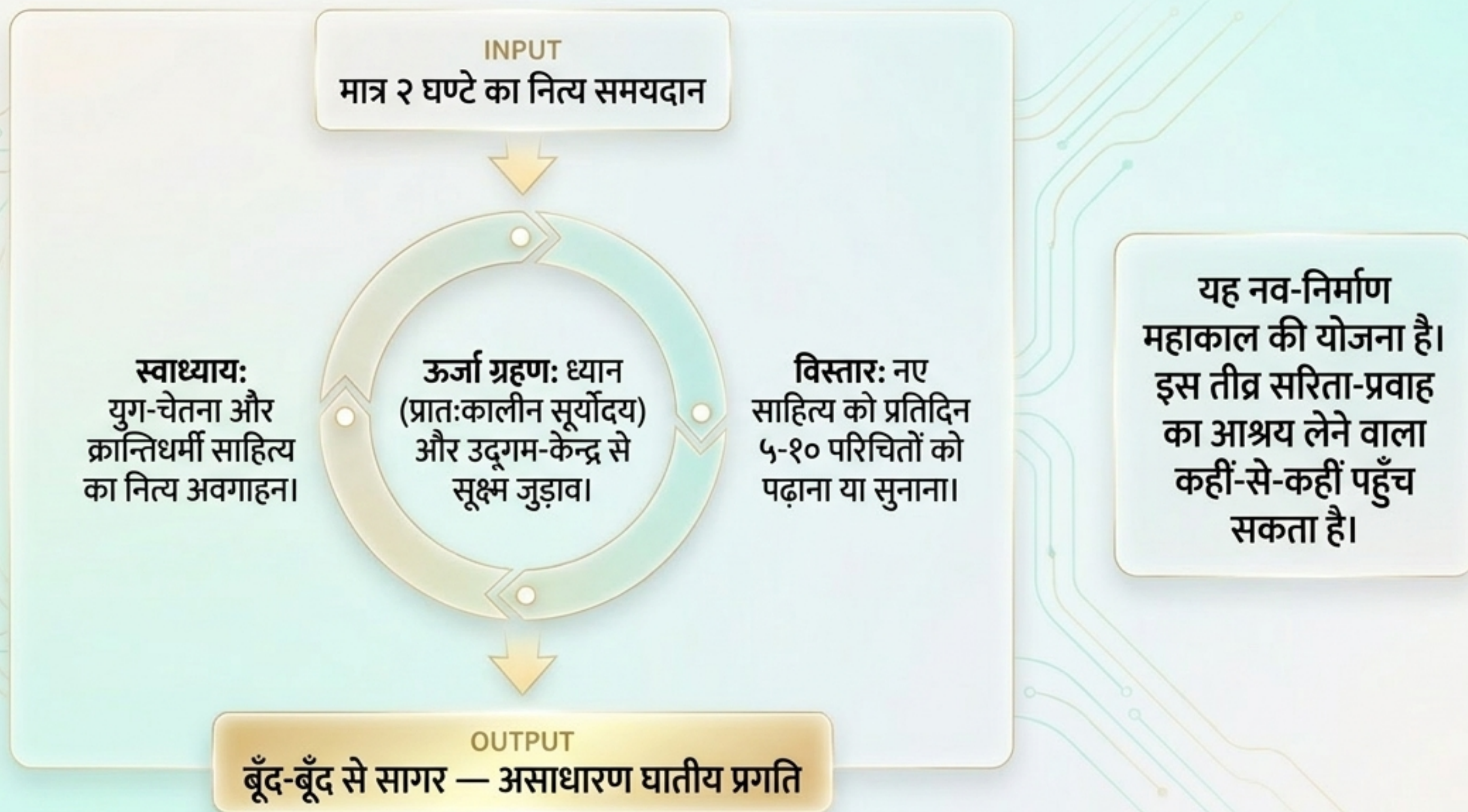
✦ भाग्य का पुनर्लेखन: इन दिनों मनुष्य
का भाग्य और भविष्य नए सिरे से
लिखा और गढ़ा जा रहा है।

महाकाल के चयनित माध्यम: एक ऐतिहासिक शृंखला



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

उठाने वाले के साथ जुड़ें: ज्ञानयज्ञ की कार्यप्रणाली



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश। जन “मेरे ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान आन-जाले कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को लो जन जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” पुनर्जन्म वेतचित पञ्जित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

विचारक्रान्ति का गणित: घातीय प्रभाव

१ परिजन

१० दिन में ५ व्यक्ति

१५ व्यक्ति प्रति माह

१८० व्यक्ति प्रति वर्ष

९०० व्यक्ति (५ वर्ष में)

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही
जिन्दा रहेगा...

...ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच
में पहुँचना ही चाहिए...

...मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

**१ लाख जाग्रत परिजन × ९०० व्यक्ति
= ९ करोड़ लोगों तक
युग-चेतना का विस्तार!**

नैष्ठिक पुरुषार्थियों द्वारा यह संख्या १८ करोड़ तक पहुँच सकती है।
जलता हुआ दीपक ही दूसरे बुझे दीपकों को जलाता है।

महाक्रान्ति का चक्र: एक परिपूर्ण वैज्ञानिक प्रणाली



आप केवल एक पुस्तक नहीं पढ़ रहे हैं; आप मानव चेतना को उन्नत करने की एक वैज्ञानिक, गणितीय रूप से सिद्ध योजना का एक जैविक और आध्यात्मिक 'नोड' बन रहे हैं।

आप इस नेटवर्क की अगली कड़ी हैं

एक लाख जीवन्त अग्रदूतों की भूमिका में आपका आमन्त्रण

- ✓ युग-धर्म के निर्वाह का संकल्प।
- ✓ क्रान्तिधर्मी साहित्य को अपने जीवन में उतारना।
- ✓ दूसरों तक ज्ञान-शरीर का प्रकाश पहुँचाना।

गिरने और गिराने की प्रतिस्पर्धा को उठने और उठाने में बदल दें।
उज्ज्वल भविष्य अब केवल एक सम्भावना नहीं, एक निश्चित गणित है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)